Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

M.E.C. - 106

लोक अर्थशास्त्र

(Public Economics)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Ved Prakash Sharma*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 320/-

Content

लोक अर्थशास्त्र

(Public Economics)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1

Question Paper—December-2023 (Solved) 1-3

Question Paper—June-2023 (Solved) 1

Question Paper—December-2022 (Solved) 1

Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-2

Sample Question Paper—1 (Solved) 1-2

Sample Question Paper—2 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

लोक अर्थशास्त्र : मूल संकल्पनाएँ (BASIC CONCEPTS OF PUBLIC ECONOMICS)

1. आर्थिक नीतियों के क्षेम अर्थशास्त्रिक आधार 1
(Welfare Foundations of Economic Policies)

2. बाजार विफलता और राजकीय विफलता 9
(Market Failure and Government Failure)

3. समता और न्याय (Equity and Justice) 15

सार्वजनिक वस्तु और बाह्यताएँ (PUBLIC GOODS AND EXTERNALITIES)

4. सार्वजनिक वस्तु सिद्धांत (Theory of Public Goods) 22

5. बाह्यताएँ और समाधान (Externalities and Solutions) 29

6. स्थानीय एवं वैश्विक सार्वजनिक वस्तुएँ (Local and Global Public Goods) 36

सामूहिक निर्णय प्रक्रिया (COLLECTIVE DECISION-MAKING)

7. सामाजिक चयन का सिद्धांत (Theory of Social Choice) 44

8. सार्वजनिक चयन का सिद्धांत (Public Choice Theory) 50

9. क्रियाविधि अभिकल्प (Mechanism Design) 57

लोक राजस्व का अर्थशास्त्र (ECONOMICS OF PUBLIC REVENUES)

10. प्रत्यक्ष और परोक्ष कराधान (Direct and Indirect Taxation) 64

11. इष्टतम कराधान (Optimal Taxation) 74

12. गैर-कर राजस्व प्राप्तियाँ (Non-Tax Revenues) 83

सार्वजनिक व्यय, ऋण एवं घाटा (PUBLIC EXPENDITURE, DEBT AND DEFICITS)

13. सार्वजनिक व्यय के सिद्धांत (Theory of Public Expenditure) 89

14. भारत में सार्वजनिक व्यय का स्वरूप 95
(Patterns of Public Expenditure in India)

15. घाटे और ऋण (Deficits and Debt) 102

राजकीय क्षेत्र एवं विनियमन का अर्थशास्त्र (ECONOMICS OF PUBLIC SECTOR AND REGULATION)

16. राजकीय क्षेत्र : कीमत अंकन सिद्धांत (Theory of Public Sector Pricing) 109

17. विनियमन के सिद्धांत (Theory of Regulation) 116

राजकोषीय संघवाद (FISCAL FEDERALISM)

18. बहुस्तरीय सरकार का सिद्धांत (Theory of Multi-level Government) 124

19. भारत में राजकोषीय संघवाद (Fiscal Federalism in India) 132

20. राजकोषीय हस्तांतरण की रूपरेखा (Design of Fiscal Transfers) 139

राजकीय नीति (PUBLIC POLICY)

21. राजकोषीय और मौद्रिक नीति : विकास और स्थिरीकरण 146
(Fiscal and Monetary Policies: Growth and Stabilisation)

22. लोक नीति की वितरणात्मक भूमिका (Public Policy for Distributive Justice) 154

23. अंतर्राष्ट्रीय नीति समन्वय (International Policy Coordination) 163

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

लोक अर्थशास्त्र

(Public Economics)

M.E.C.-106

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *प्रत्येक खण्ड से निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

भाग-क

नोट : इस भाग से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. लोकार्थ अर्थशास्त्र की परिभाषा दीजिए। यह भी समीक्षा कीजिए कि इसे व्यवहारिक क्षेम अर्थशास्त्र भी क्यों कहा जाता है?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'लोक अर्थशास्त्र एवं क्षेम अर्थशास्त्र : अंतराफलक', 'क्षेम की संकल्पना', पृष्ठ-2, सामाजिक क्षेम फलन', पृष्ठ-5, प्रश्न 1, पृष्ठ-6, प्रश्न 2

प्रश्न 2. भारत में किस सीमा तक राजकोषीय संघवाद के सिद्धांतों का पालन किया जाता है? भारत में केन्द्र-राज्य वित्तीय संबंधों की समस्याएँ बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-19, पृष्ठ-133, 'राजकोषीय संघवाद का सिद्धांत', पृष्ठ-138, प्रश्न 5

प्रश्न 3. राजकोषीय एवं मौद्रिक नीति में भेद स्पष्ट कीजिए। उच्च संवृद्धि की प्राप्ति में सहायक राजकोषीय नीति के विभिन्न उपस्करों की भूमिका की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-21, पृष्ठ-146, 'राजकोषीय नीति', पृष्ठ-147, 'मौद्रिक नीति', पृष्ठ-150, प्रश्न 4

प्रश्न 4. ऋण विमोचन क्या होता है? सरकारों द्वारा अपने ऋण चुकाने के लिए अपनाई गई विभिन्न विधियों को समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-15, पृष्ठ-103, 'ऋणादान', पृष्ठ-104, 'ऋणधारणीयता'

खण्ड-ख

नोट : इस भाग से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 5. ऋणात्मक बाह्यताएँ क्या होती हैं? इनकी चुनौती से निपटने के लिए उपयोगी विभिन्न नीतिगत उपस्करों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-29, 'नकारात्मक बाह्यताएँ', पृष्ठ-32, 'नीति उपाय'

प्रश्न 6. निम्नलिखित पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) कदमों द्वारा मतदान

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-55, 'बहु-चरणीय मतदान'

(ख) प्रगतिशील कराधान

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-64, 'प्रगामी, समानुपातिक और प्रतिगामी कराधान'

प्रश्न 7. टाईबाउट प्रतिमान पर चर्चा कीजिए और इसकी मान्यताएँ भी समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-36, 'टाइबाउट मॉडल' पृष्ठ-39, प्रश्न 3 तथा प्रश्न 4

प्रश्न 8. बाजार की विफलता से आपका क्या अभिप्राय है? आप बाजार विफलता का निदान करने के लिए क्या उपाय सुझाएँगे?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-10, 'बाजार विफलता', पृष्ठ-13, प्रश्न 8

प्रश्न 9. ऐरो के असंभाव्यता प्रमेय का निरूपण कर उसे सिद्ध कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-45, 'ऐरो का असंभाव्यता प्रमेय', पृष्ठ-49, प्रश्न 2

प्रश्न 10. कराधान के 'कर-दान क्षमता' सिद्धांत पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-70, प्रश्न 2

प्रश्न 11. लॉरेंज एवं संकेंद्रण वक्रों के आधार पर किसी कर को किस दिशा में प्रतिगामी कहा जाता है?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-22, पृष्ठ-156, 'लॉरेंज वक्र', पृष्ठ-157, 'संक्रेंद्रण वक्र', पृष्ठ-160, प्रश्न 8

प्रश्न 12. लोक व्यय के सिद्धांतों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-90, 'सार्वजनिक व्यय के सिद्धांत'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

लोक अर्थशास्त्र

(Public Economics)

M.E.C.-106

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *प्रत्येक खण्ड से निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

भाग-क

नोट : इस भाग से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. समझाइए कि किस प्रकार प्रत्यक्ष लोकतंत्र क्षेम अधिकतमीकरण की गारंटी नहीं देता?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-11, 'प्रत्यक्ष लोकतंत्र'

इसे भी देखें–प्रत्यक्ष लोकतंत्र के अंतर्गत नागरिक ही निर्णय लेते हैं। इसे उदाहरण के माध्यम से इस प्रकार समझ सकते हैं–

माना कि 3000 मतों वाला समाज तीन समूहों–वृद्धजन, माता-पिता तथा अन्य में बंटा है। विकल्प अस्पताल या विद्यालय में से ही चुना जाना है। इस स्थिति में विकल्प मतदान हेतु प्रस्ताव प्रस्तुत कर आसानी से चुना जा सकता है। इनमें से जिस प्रस्ताव को भी 50 प्रतिशत से अधिक मत मिलेंगे, उसे चुन लिया जाएगा। ऐसे लगभग हर मामले में, किसी निर्णय पर पहुँचा जा सकता है। इसे 'बहुमत का नियम' कहा जाता है, जो कि तब काम करता है, जब चयन केवल दो विकल्पों में से किया जाना हो, परंतु यदि विकल्पों की संख्या बढ़ाकर दो से अधिक कर दी जाए तो कुछ आधारभूत युक्तियुक्त सिद्धांतों को सहकालिक रूप से संतुष्ट करना संभव नहीं होगा। अब तीन प्रकार के मतदाता अधिमान तालिका के अनुसार होंगे–

तीन विकल्पों के तहत निर्णय			
अधिमान क्रम	वृद्धजन	युवा माता-पिता	अन्य
प्रथम अधिमान	अस्पताल	विद्यालय	स्टेडियम
द्वितीय अधिमान	स्टेडियम	अस्पताल	विद्यालय
तृतीय अधिमान	विद्यालय	स्टेडियम	अस्पताल

यदि इन तीनों परियोजनाओं के लिए मतदान कराया जाता है तो मतदाता अपने प्रथम अधिमान व्यक्त करेंगे और प्रत्येक को 1000 मत मिलेंगे यानी अनिर्णय की स्थिति। बहरहाल, यदि 'अन्य' समूह में से पाँच 'अस्पताल' के पक्ष में मत दे दें तो परियोजना का चयन 'फस्ट पास्ट द पोस्ट' नामक मतदान विधि से किया जा सकता है, क्योंकि उसे ही सर्वाधिक संख्या में वोट मिले होंगे, परंतु यह बहुत अधिक वांछनीय स्थिति नहीं होगी, क्योंकि लगभग दो-तिहाई मतदाताओं को अपने प्रथम अधिमान के रूप में अस्पताल नहीं रखा था। अतः इससे बहुमत के सिद्धांत का उल्लंघन होता है। मान लेते हैं कि प्रथम मत 'अस्पताल' अथवा 'स्टेडियम' के बीच एक विकल्प है, जिसमें 2000 (वृद्धजन एवं युवा माता-पिता) 'स्टेडियम' की बजाय 'अस्पताल' पसंद करते हैं और 'अस्पताल' पहले दौर में विजित रहता है। यदि मतदान का दूसरा और 'अस्पताल' और 'विद्यालय' के बीच हो तो उस स्थिति में 'विद्यालय' चुना जाएगा, जब 'युवा माता-पिता' व 'अन्य', 'अस्पताल की बजाय 'विद्यालय' पसंद करेंगे। अब क्या हम 'विद्यालय' को विजेता घोषित कर सकते हैं? यदि मतदान 'विद्यालय' और 'स्टेडियम' के बीच होता है तो 'स्टेडियम' जीत जाएगा, क्योंकि 'वृद्धजन' व 'अन्य' विद्यालय की बजाय इसे ही पसंद करते हैं? अतः, किसी युक्तियुक्त निर्णय पर नहीं पहुँचा जा सकता है।

तब क्या हम मतदान नियम को बदल सकते हैं? उदाहरण के लिए, प्रथम अधिमान को 3 अंक दिए जा सकते हैं, दूसरे को 2 और तीसरे को 1। अब मतदाताओं को सभी परियोजनाओं पर अपने-अपने अधिमान घोषित करने को कहा जाता है। उक्त अंकों को तब मतों की संख्या से गुणा कर दिया जाता है। हमारे उदाहरण में, उक्त तीन समूहों में से 'अस्पताल' को मिलेंगे $(1000 \times 3) + (1000 \times 1) + (1000 \times 2)$ अंक।

मतदाता विभिन्न विकल्पों पर स्पष्ट कोटिक्रम दर्शाते हैं और ये कोटिक्रम संक्रामी एवं अप्रतिबंधित होते हैं। किन्हीं भी दो परियोजनाओं का कोटि क्रम किसी तीसरे विकल्प के समावेशन अथवा अपवर्जन से प्रभावित नहीं होता। यदि कोई परियोजना किसी भी बदतर स्थिति में लाए बगैर किसी अन्य को बेहतर स्थिति में ला सकती हो तो उसे चुना ही जाना चाहिए तथा सामाजिक कोटिक्रम

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

लोक अर्थशास्त्र
(Public Economics)

लोक अर्थशास्त्र : मूल संकल्पनाएँ
(Basic Concepts of Public Economics)

आर्थिक नीतियों के क्षेम अर्थशास्त्रिक आधार
(Welfare Foundations of Economic Policies)

1

परिचय

किसी भी सामान्य अर्थव्यवस्था में सरकार द्वारा नीति हस्तक्षेप की संभावनाएँ रहती हैं, यद्यपि उस अर्थव्यवस्था के सांस्थानिक संगठन के आधार पर उसके अलग-अलग प्रकार हो सकते हैं। किसी भी प्रतिस्पर्धात्मक बाजार आधारित अर्थव्यवस्था पर ज्यादातर वैयष्टिक निर्णयन एजेंसियों की गतिविधियों का वर्चस्व रहता है। दूसरी तरफ, कोई भी कमान अर्थव्यवस्था प्रमुखतः सरकार के नीति नियोजकों द्वारा संचालित होती है। इन दोनों ही प्रकारों में सरकार की आवश्यकता उस समय समुचित नीति-हस्तक्षेप की होती है, जब अर्थव्यवस्था इच्छानुसार न चल रही हो। बाजार अर्थव्यवस्था में बेहद सशक्त क्षेम-प्रमेय विद्यमान हैं, जो उसके इष्टतम निष्पादन के लिए मानदण्ड प्रदान करते हैं। कमान अर्थव्यवस्था में भी वैयष्टिक क्षेम को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता, यद्यपि किसी व्यक्ति का क्षेम सुनिश्चित करने में सरकार की भूमिका किसी अर्थव्यवस्था के सापेक्ष कार्यक्षेत्र में कहीं ज्यादा मजबूत होती है।

इस अध्याय के अंतर्गत हम लोक अर्थशास्त्र के उद्देश्य और क्षेम-अर्थशास्त्र के सिद्धांतों के उद्देश्य के मध्य अंतराफलक की रूपरेखा, अनेक प्रकार के सामाजिक क्षेम फलनों में स्वाभाविक, क्षेम संकल्पनाओं पर चर्चा, किसी प्रतिस्पर्धी बाजार में आर्थिक नीतियों के क्षेत्र विषयक आधार किस प्रकार पैरेटो निकर्ष द्वारा निर्देशित होते हैं तथा किस प्रकार कोई सामाजिक रूप से ज्यादा वांछित क्षेम-स्तर उपयोगिता संभावना सीमांत पर विचार कर प्राप्त किया जा सकता है आदि का अध्ययन करेंगे।

अध्याय का विहंगावलोकन

लोक अर्थशास्त्र एवं क्षेम अर्थशास्त्र : अंतराफलक

लोक अर्थशास्त्र का प्रमुख उद्देश्य अर्थव्यवस्था में विभिन्न एजेंटों के निर्णयन क्षेत्र में निहित किसी भी समस्या को दूर करने के लिए सरकार द्वारा नीति-हस्तक्षेप हेतु व्यापक जानकारी देना। ये बाजार वस्तुओं एवं सेवाओं के लिए हो सकते हैं और विकृतियाँ इन रूपों में दिखाई दे सकती हैं-

1. विक्रेताओं अथवा क्रेताओं को एकाधिकार।
2. फर्मों या परिवारों पर कर या उनको अर्थसाहाय्य।
3. सार्वजनिक वस्तुओं की विद्यमानता, जहां उपभोग असंभव होता है।
4. बाह्य मितव्ययताएं, जो संबंधित क्रियाकलापों में सीधे शामिल न होते हुए भी लोगों को प्रभावित करती हैं।

ये समस्त मामले ऐसे हैं, जिनमें वैयक्तिक अभिकर्ता अपने इष्टतम क्षेम-स्तरों तक पहुंचने में असफल रहते हैं। इस प्रकार किसी भी प्रतिस्पर्धी बाजार अर्थव्यवस्था में सरकार द्वारा किया गया कोई भी नीतिगत प्रयास उस अर्थव्यवस्था में वैयक्तिक अभिकर्ताओं की विकेंद्रीकृत कार्रवाईयों का परिणाम सुधारने पर आधारित होता है। इसी कारण यह अपने सैद्धांतिक दृष्टिकोण में लोक अर्थशास्त्र के सिद्धांत का निर्माण करता है।

लोक अर्थशास्त्र में क्षेम अर्थशास्त्र के साथ व्यापक अधित्यापन देखा जाता है। फिर भी इन दोनों के मध्य इस अर्थ में एक स्पष्ट सीमांकन है कि क्षेम अर्थशास्त्र में ज्यादातर क्षेम के सभी स्तरों पर चर्चा की जाती है, जबकि लोक अर्थशास्त्र में प्रतिनिधि वैयक्तिक क्रेता या विक्रेता पर ध्यान दिया जाता है।

क्षेम की संकल्पना

क्षेम फलन इस प्रकार संयोज्य है कि समाज व्यक्तियों की सम्पन्नता की अधिक परवाह नहीं करता। तद्नुसार, यदि कुछ उपयोगिता किसी निर्धन व्यक्ति से लेकर किसी धनवान व्यक्ति को दे दी जाती है, तो भी क्षेम स्तर यथावत रहेगा। इसका तात्पर्य है कि उक्त व्यक्तियों के लाभ और हानि उनकी सम्पन्नता स्थितियों पर निर्भर नहीं करते हैं। सामाजिक क्षेम फलन विभिन्न विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में प्रचलित सामाजिक संजाल जैसे मुद्दों की उपेक्षा कर व्यक्ति-केन्द्रित

www.neerajbooks.com

ही होता है। इसीलिए लोक अर्थशास्त्र में प्रमुख संकल्पनाएं वैयक्तिक उपयोगिता स्तरों में मूलबद्ध क्षेम अवधारणाओं से ही नियंत्रित होती हैं।

सामाजिक क्षेम फलन (SWF)

सामाजिक क्षेम फलन समाज के सदस्यों के क्षेम फलनों को परिवर्तित करके समाजव्यापी क्षेम का निर्धारण करने का प्रयास है। दूसरे शब्दों में, सामाजिक क्षेम फलन वैयक्तिक उपयोगिताओं को सामाजिक क्षेम कुशल का रूप प्रदान करता है।

विल्फ्रेदो पैरेटो, 1929 के अनुसार, 'यदि किसी व्यक्ति की उपयोगिता किसी अन्य व्यक्ति की उपयोगिता में कोई बदलाव लाए बिना बढ़ती है, तो सामाजिक क्षेम में वृद्धि होती है।'

गणितीय रूप से -

$$\frac{\partial W}{\partial u^i} > 0 \text{ सभी } i = a, b, c, \ldots m \text{ हेतु}$$

किन्हीं दो व्यक्तियों की तुलना करते हुए सामाजिक क्षेम को किसी निर्धारित स्तर पर रख सकते हैं एवं उन लोगों के मध्य उपयोगिता को पुनर्वितरित कर सकते हैं, ताकि सामाजिक क्षेम न बदले। समाज में यदि सिर्फ दो व्यक्ति ही हों तो हम इन दो व्यक्तियों के उपयोगिता स्तरों के ऐसे विभिन्न संयोजनों का बिंदुपथ अंकित कर सकते हैं, जो सामाजिक क्षेम का एक निर्धारित स्तर प्रस्तुत करते हों। इस प्रकार के बिंदुपथ को सामाजिक समभाव वक्र (SIC) कहा जाता है।

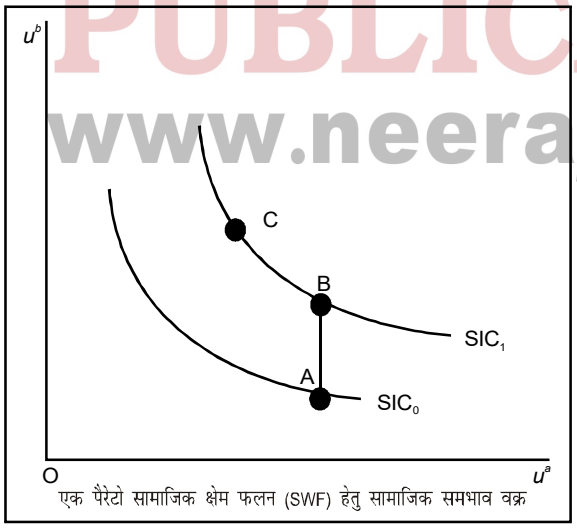

एक पैरेटो सामाजिक क्षेम फलन (SWF) हेतु सामाजिक समभाव वक्र

प्रस्तुत रेखाचित्र में मानक सामाजिक समभाव वक्र a तथा b नामक दो व्यक्तियों के वैयक्तिक उपयोगिता स्तरों से व्युत्पन्न है। पैरेटो निष्कर्षानुसार, B, A की तुलना में श्रेष्ठ बिन्दु है क्योंकि b व्यक्ति a व्यक्ति को कोई नुकसान पहुंचाए बिना A की बजाय B बिंदु पर बेहतर स्थिति में होता है। साथ C बिंदु को समाज द्वारा A बिंदु की तुलना में ज्यादा बेहतर स्थिति प्रदान की जाती है क्योंकि C एक उच्चतर सामाजिक समभाव वक्र (SIC) पर आधारित है, इसलिए समाज स्थितियों में C और B के मध्य निर्पेक्ष भाव से रहता है।

उपयोगितावादी सामाजिक क्षेम फलन

उपयोगितावादी सामाजिक क्षेम फलन जेरेमी बेंथम द्वारा इस रूप में दर्शाया गया है, $W = u^a + u^b + u^c + \ldots + u^m$

क्षेम फलन इस प्रकार संयोज्य है कि समाज व्यक्तियों की सम्पन्नता की ज्यादा परवाह नहीं करता। इस प्रकार सामाजिक क्षेम फलन अधिकतम सदस्यों के अधिकतम हित पर आधारित कसौटी पर केन्द्रित है। इसमें सामाजिक क्षेम को व्यक्तियों की उपयोगिता के योगफल द्वारा परिभाषित करने का प्रयास किया जाता है।

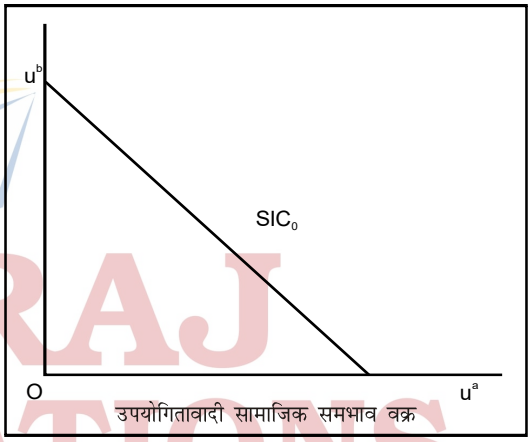

उपयोगितावादी सामाजिक समभाव वक्र

सामाजिक समभाव वक्रों की दृष्टि से इस उदाहरण में सामाजिक समभाव वक्र (SIC) दो अक्षों के साथ 45^0 प्रावण्य वाली एक ऋजु रेखा है। इसका तात्पर्य है कि समाज दो व्यक्तियों के मध्य समान दर पर उपयोगिता का लेन-देन कर सकता है।

सिटोवस्की-बर्गसन सामाजिक क्षेम फलन

सिटोवस्की-बर्गसन द्वारा प्रस्तुत सामाजिक क्षेम वक्र समाज में व्यक्तियों के लिए लाभ और हानि की समानता की कल्पना किए बिना पैरेटो निकर्ष को संतुष्ट करता है। यह बताता है कि यदि कोई निर्धन व्यक्ति उत्तरोत्तर उपयोगिता गंवाता रहता है तो धनवान वर्ग को वर्धमान रूप से ज्यादा उपयोगिता प्राप्त करनी पड़ती है, ताकि समाज पुनर्वितरण हेतु निर्पेक्ष रह सके। बर्गसन का क्षेम फलन सिटोवस्की के फलन की कुछ परेशानियों को दूर कर देता है। वैसे मूल क्षेम फलन प्रायः एक समान ही दिखाई देते हैं, क्योंकि वे वैयक्तिक उपयोगिता स्तरों के फलस्वरूप समस्त क्षेम को दर्शाते हैं। उस नजरिए से यह वर्तमान उद्देश्य हेतु एक ही प्रकार के सामाजिक क्षेम फलन के तहत उन्हें एकाकार करने के लिए उचित है।

रॉल्स का सामाजिक क्षेम फलन

रॉल्स की सामाजिक क्षेम फलन की अवधारणा यह सुझाव देती है कि समाज को अपने न्यूनतम उपयोगिता प्राप्त सदस्य की पहचान

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

करके उनके क्षेम हितों में सुधार हेतु नीतियां बनानी चाहिए। समाज के ऐसे व्यक्तियों की उपयोगिता का उन्नयन ही सामाजिक क्षेम वृद्धि के लिए उपयुक्त कसौटी है।

रॉल्स ने अपनी पुस्तक *'ए थ्योरी ऑफ जस्टिस'* (1971) में यह आग्रह किया था कि समाज के सबसे निम्नतम स्तर वाले व्यक्ति की दशा में सुधार को ही सामाजिक क्षेम में सुधार समझना चाहिए।

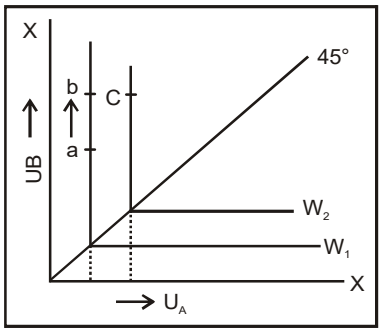

प्रस्तुत रेखाचित्र की सहायता से राउल्स ने सामाजिक क्षेम फलन को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। ये समभाव वक्र 45° की रेखा के समकोणीय आकार के होते हैं। यदि प्रथम उपयोगिता स्तर W_1 बिन्दु A का चलन बिन्दु *b* की ओर अग्रसर होता है, तब सामाजिक क्षेम में वृद्धि दिखाई नहीं देती, क्योंकि इस चलन से केवल व्यक्ति B की उपयोगिता में वृद्धि होती है, परन्तु निम्न आय स्तर के व्यक्ति A की स्थिति में कोई सुधार नहीं होता। यद्यपि पैरेटो की कसौटी के अनुसार इसे सुधार की स्थिति के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। पैरेटो अभीष्टता की मान्यता है कि एक व्यक्ति पूर्ववत रहे और दूसरे व्यक्ति की अवस्था में सुधार सकल क्षेम सुधार को प्रदर्शित करता है, परंतु रॉल्स के मतानुसार बिन्दु C पर सुधार की अवस्था को स्वीकार किया जा सकता है, क्योंकि रॉल्स समाज के निम्नतम आय स्तर वाले व्यक्तियों में सुधार की अवस्था को सामाजिक क्षेम सुधार से सम्बन्धित मानते हैं।

दक्षता और पैरेटो इष्टतमता

किसी भी प्रतियोगी बाजार अर्थव्यवस्था में आर्थिक नीतियों का क्षेम आधार पैरेटो निकर्ष द्वारा नियंत्रित है, जो दर्शाता है कि किसी भी अर्थव्यवस्था में सबसे ज्यादा दक्ष समाधान किसी पैरेटो इष्टतम स्थिति द्वारा किया जाता है। प्रमेय 1 के अनुसार, बाजार स्वयं लोगों को सर्वाधिक संभव समाधान की ओर अग्रसर करता है। यदि व्यक्ति वर्ग अपने अधिकतम उपयोगिता स्तरों तक पहुंच सकता है तो सामाजिक कल्याण भी उच्चतम सीमा तक पहुंच सकता है। क्षेम अर्थशास्त्र का प्रमेय सरकारी दखल को स्वीकार नहीं करती क्योंकि यह उन समस्याओं की अनदेखी करती है, जो लोगों को उपयोगिता अधिकतमीकरण के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने से रोकती हो। यह प्रमेय बताता है कि व्यक्ति के सामने बाहरी प्रभाव न हो तो अर्थव्यवस्था स्वयं ही सर्वाधिक दक्ष समाधान प्राप्त कर लेगी।

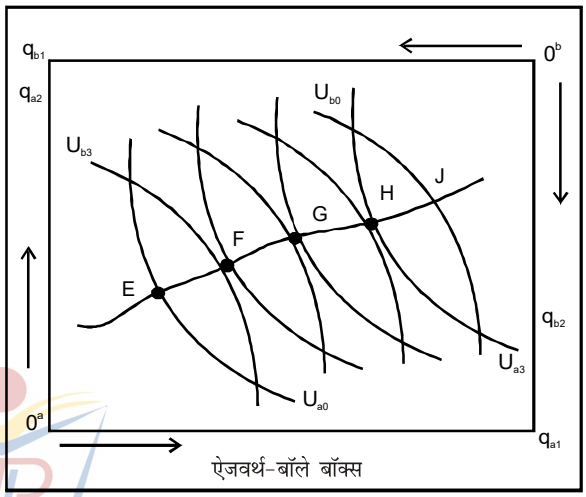

ऐजवर्थ-बॉले बॉक्स

प्रस्तुत चित्र दर्शाता है कि क्षेम प्रमेय-1 किसी प्रतियोगी बाजार अर्थव्यवस्था में पैरेटो इष्टतम परिणाम की ओर अग्रसर करता है। इस चित्र में प्रमुख दो बिन्दु हैं-एक व्यक्ति a के लिए तथा b दूसरे व्यक्ति के लिए। इसलिए यह सिर्फ 2 व्यक्तियों के वैयक्तिक निर्णयों पर एक 2-व्यक्ति और 2-वस्तु सरलीकृत सामाजिक क्षेम फलन है। इन दो व्यक्तियों के समभाव वक्र दो वस्तुओं संबंधी उनकी समुचित मात्राओं पर आधारित हैं, जहां प्रथम वस्तु दोनों के लिए क्षैतिज अक्ष पर मापी गई है तथा दूसरी वस्तु भी दोनों के लिए शीर्ष अक्ष पर मापी गई है। मूल बिंदु से क्षैतिज और शीर्ष अक्षों की दूरी उक्त दो वस्तुओं के प्रदत्त परिणाम बताती है।

पैरेटो इष्टतमता बताती है कि अर्थव्यवस्था हेतु सर्वाधिक दक्ष समाधान वहां होता है, जहां सभी व्यक्तियों के लिए समान रूप से बेहतर परिणाम की स्थिति होती है। इससे यह साफ होता है कि आर्थिक नीतियां कोई प्रमुख भूमिका नहीं निभातीं क्योंकि बाजार स्वयं अर्थव्यवस्था को अनकूलतम स्थिति की ओर अभिप्रेरित करती है।

उपयोगिता संभावना सीमा

संविदा वक्र से व्युत्पन्न इष्टतम उपयोगिता स्तरों का बिंदुपथ उपयोगिता संभावना सीमा कहलाता है। संविदा बिंदुपथ पर अवस्थित U_1 और U_b के समस्त संभव इष्टतम संयोजनों का बिंदुपथ होता है। चूंकि वस्तुओं के कुल परिणाम ज्ञात हैं, एक व्यक्ति की उपयोगिता में वृद्धि किसी दूसरे व्यक्ति की उपयोगिता की कीमत पर ही हो सकती है।

www.neerajbooks.com

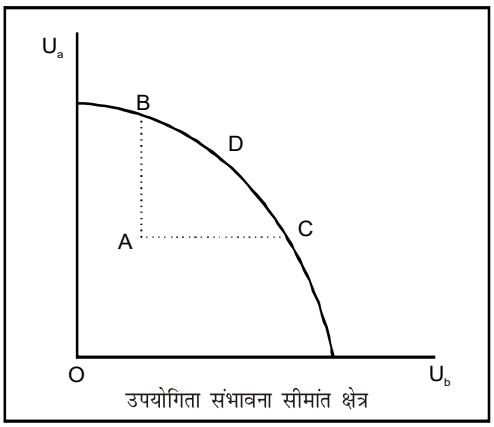

प्रस्तुत चित्र में बिंदु A से कोई भी क्रिया बिंदु A के उत्तर-पूर्व में वृत्तपाद में किसी भी बिंदु की ओर पैरेटो की दृष्टि से क्षेम सुधार कहलाएगी। इसीलिए बिंदु B, C और D सभी A की अपेक्षा सुधार हैं, क्योंकि वे पैरेटो निकर्ष पर खरे उतरते हैं। सामान्यत: उपयोगिता संभावना सीमा प्रमुख बिंदु पर आधारित होती है, जिसका अर्थ है कि यदि कोई व्यक्ति a से कुछ उपयोगिता ले लेता है तो हमें उस हानि की प्रतिपूर्ति किसी अन्य व्यक्ति b हेतु उपयोगिता की मात्रा बढ़ा कर करनी पड़ती है। प्रमेय-2 के अनुसार यदि विद्यमान संतुलन बिंदु वह नहीं है, जो समाज की दृष्टि से वांछनीय होता है, तो आय और परिणामत: वस्तुओं का कोई भी पुनर्वितरण किसी अन्य पैरेटो इष्टतम बिंदु पर एक कहीं ज्यादा वांछनीय परिणाम की ओर प्रवृत्त कर सकता है। तद्नुसार बिंदु C एक पैरेटो दक्ष संतुलन बिंदु हो, लेकिन उस बिंदु पर व्यक्ति b और व्यक्ति a की बजाय कहीं ज्यादा उपयोगिता प्राप्त करता हो और समाज a के लिए बड़ा भाग चाहता हो क्योंकि a, b की तुलना में निर्धन है, यहां नीति-हस्तक्षेप की जरूरत होगी ताकि धनवान व्यक्ति पर यथोचित कर लगाया जा सके और गरीब व्यक्ति को आर्थिक मदद की जरूरत होगी ताकि आपका परिणाम पुनर्वितरण उपयोगिता के बेहतर वितरण के साथ एक नए पैरेटो इष्टतम संतुलन D की ओर प्रवृत्त करे।

क्षतिपूर्ति सिद्धांत

यदि पुनर्वितरण कुछ व्यक्तियों के नुकसान में परिणाम होता हो तो इस प्रकार पुनर्वितरण के प्रति हानिभोगियों की ओर से विरोध किया जा सकता है। ऐसी स्थितियों के समाधान के लिए कुछ क्षतिपूर्ति सिद्धांत प्रस्तुत किए गए हैं, ताकि लाभार्थी हानिभोगियों की प्रतिपूर्ति करें और फिर भी लाभ में रहें। क्षतिपूर्ति सिद्धांत हैं–

1. कैल्डर निकर्ष–समाज में वैकल्पिक आवंटन β के मुकाबले आवंटन α ज्यादा पसंद किया जाएगा, अगर इस आवंटन से लाभार्थी हानिभोगियों की प्रतिपूर्ति कर सकते हों और फिर भी लाभ में रहते हों।

2. हिक्स निकर्ष–समाज में वैकल्पिक आवंटन β की तुलना में आवंटन α ज्यादा पसंद किया जाएगा, अगर हानिभोगी इस प्रकार का आवंटन न करने के लिए लाभार्थियों को लाभदायक रूप से उत्कोच न दे सकते हों।

3. सिटोवस्की निकर्ष–समाज में वैकल्पिक आवंटन β की तुलना में आवंटन α ज्यादा पसंद किया जाएगा, अगर लाभार्थी बदलाव के लिए हानिभोगियों की प्रतिपूर्ति कर सकते हों, जबकि हानिभोगी इस बदलाव को न करने के लिए लाभार्थियों को लाभजनक रूप से रिश्वत न दे सकते हों।

लोक अर्थशास्त्र में क्षेम निकर्षों का अनुप्रयोग

वस्तुओं के पुनर्वितरण में सबसे अधिक दक्ष समाधान पैरेटो इष्टतमता की शर्त पूरी होने पर निर्भर करता है। कई संभव स्थितियों के मध्य किसी विशिष्ट पैरेटो इष्टतम स्थिति हेतु अधिमान होने की दशा में, हमें किसी क्षतिपूर्ति सिद्धांत के इस्तेमाल की जरूरत पड़ती है।

एकाधिकार शक्ति

क्षेम अधिकतमीकरण एक प्रतियोगी बाजार अर्थव्यवस्था की कल्पना पर आधारित है। प्रतियोगी अर्थव्यवस्था का मूल आधार अधिसंख्य क्रेताओं एवं विक्रेताओं की विद्यमानता पर निर्भर करता है। यदि इस शर्त को नजरअंदाज किया जाता है तो बाजार में क्रेता या विक्रेता की तरफ से संघर्ष दिखाई देता है। इससे एजवर्थ-बॉले बॉक्स में समस्या पैदा होती है। हालांकि यह आरेख उत्पादन पक्ष को छोड़ देता है, तब क्रेता अथवा विक्रेता की ओर से एकाधिकार शक्ति का अनुभव किया जा सकता है।

माना कि एजवर्थ-बॉले बॉक्स दर्शाते समय दो वस्तुओं की प्रदत्त मात्रा की जगह दो वस्तुओं के वास्तविक उत्पादन द्वारा दर्शाया जाता है। माना कि एक वस्तु का उत्पादन किसी एकाधिकारवादी द्वारा नियंत्रित किया जाता है, लेकिन दूसरी वस्तु प्रतिस्पर्धी विक्रेताओं द्वारा उत्पादित की जाती है। तब मानक नव-शास्त्रीय सिद्धांत के अनुसार, प्रथम विक्रेता ऐसी कीमत वसूलेगा, जो प्रत्यक्ष प्रतियोगी कीमतों से ज्यादा होगी और उत्पादित मात्रा अपेक्षाकृत कम होगी। परिणामस्वरूप अदक्ष परिणाम सामने आएगा और उपभोक्ता समूह को प्रतियोगी बाजार समाधान की तुलना में कुछ उपयोगिता हानि झेलनी होगी।

सरकार द्वारा नीति-हस्तक्षेप की उक्त समस्या को काफी सीमा तक हल किया जा सकता है। यदि एकाधिकार एक नैसर्गिक एकाधिकार हो, क्योंकि उसके उत्पादन से उत्तरोत्तर आकस्मिक लाभ होता है, जितना ज्यादा उत्पादन होगा उतनी ही कम उसकी प्रति इकाई उत्पादन लागत होगी। फलस्वरूप उत्पादनकर्ता अपनी कीमतों में कटौती कर प्रतिस्पर्धियों को आसानी से बाहर निकाल सकता है। ऐसी स्थिति जल आपूर्ति या बिजली आपूर्ति जैसी जनोपयोगी सेवाओं